kumar T.
Y(S) -
e, T.

यदपि इस क्रांति को काफी निर्ममता से दबा दिया गया लेकिन बाद के वर्षों आगे रूस की सर्वाधिक महत्वपूर्ण संगठन 'The Sovits' की स्थापना इन्हीं असफल क्रांतिकारीयो द्वारा हुई थी। यह युद्ध रूस के प्रभाव पर पड़े क्रांति की चर्चा करते है <u>जवाहरलाल नेहरू</u> ने अपनी पुस्तक 'Glimoeses of world History' मे लिखा है इसने 1917 की oct क्रांति के लिए (रूसी कैलेण्डर के अनुसार) एक प्रकार से आधार शिला रखी जिसने रूस की कायरता की।

<u>चीन</u>

चीन को इसने दो तरह से प्रभावित किया। प्रथम तो चीन मे जिस तरह पश्चिमी साम्राज्यवाद राज्यों के बीच होड़ लगी थी इस युद्ध मे संघर्ष छिड़ने की आशंका थी। जो इस युद्ध ने स्पष्ट कर दिया था लेकिन संघर्ष का अर्थ उनका विनाश होता जिससे सभी देश बचना चाहते थे। अतः एक मात्र विकल्प के तौर पर उसने सहयोग का एक रास्ता अपनाया और चीन मे 'open door policy' के अवलम्बन करने का निर्णय लिया।

दूसरी तरफ इसने चीन मे पुनर्जागरण का सुत्रपात किया। 1894 मे चीन जापान से पराजित हुआ था और चीन मे प्रभाव क्षेत्र कायम के लिए अंतराष्ट्रीय ताकतो मे होड़ सी लग गई थी। जिसके खिलाफ प्रतिक्रिया के तौर पर चीन मे 1899-1900 मे बॉक्सर आंदोलन हुआ। इस युद्ध ने चीन की 1911 की क्रांति का पृष्ठभूमि तैयार किया।

चीन के देशभक्तो ने इस युद्ध से जो सबक सीखा वह यह था कि अब समय की गति पहचानकर एक आसान प्रयास से जापान ने अपना आधुनिकीकरण कर रूस जैसी विशाल यूरोपीय शक्ति को पराजित किया था तो चीन के लोग भी जापान की तरह ही चीन को उन्नत बनाने और शक्तिशाली बनाने की बात सोचने लगे। चीनीवासी अपने यहाँ नवयुग लाना चाहते थी इस भावना से देश की परिवर्तन डॉ. सनयात सेन के नेतृत्व मे 1911 की चीनी क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार की और अंततः मंचू राजवंश इसी के द्वारा समाप्त हुआ।

Ashish

एशिया

इसके परिणाम स्वरूप एशिया में राजनीतिक पुर्नजागरण और नवीन चेतना आई। एशियाई लोगों में राष्ट्रीयता की भावना का संचार हुआ। 19वी शदी में प्रायः सभी एशियाई देशों को पश्चिम देशों की साम्राज्यवादी विलासिता का शिकार होना पड़ा यूरोप और अमेरिका के गोरे लोग सभ्यता, संस्कृति और विकास के आधार पर श्रेष्ठता की भावना से ग्रसित था। और एशियाई लोगों को हीन समझते थे। तथा एशियाई लोगों की मानसिक दशा भी कुछ ऐसी ही हो गई थी। पाश्चात्य शिक्षा के अभाव के चलते वे अपने को यूरोपीय लोगों की तुलना में हीन समझने लगे थे। लेकिन जपान की विजय ने यूरोप और गोरे लोगों की श्रेष्ठता की भावना 'white's men Burdens'

एशिया के लोग यह अनुमान करने लगा गए थे कि पश्चिम देशों की नवीन सभ्यता और सांस्कृतिक को अपनाकर वो भी जपान की तरह पश्चिम का प्रतिरोध कर के उससे प्रतिशोध ले सकते हैं। आजतक एशिया लोग के परंपरागत लोग यह समझते हैं कि पश्चिम की शक्ति अजेय है जिसे शिकस्त नहीं दी जा सकती है। लेकिन जपान की इस विजय ने पश्चि० की श्रेष्ठता और अजेयता की भावना को महज भ्रम को सिद्ध कर दिया। यह पहला अवसर था जब किसी एशियाई ताकत ने किसी यूरोपीय महाशक्ति को शिकस्त दी। इसने एशियाई लोगों की अजेता या अपनी ज्ञान संबंधी धारणा को आगे बढ़ाया। पश्चि० देशों की दासता से मुक्ति पाने के लिए नई लहर एशियन एम्पायर ने और नेहरू जी ने कहा लिखा है - "Asiea for asiatic was the cry now commelete hesd in eastern countries!"

इसका प्रत्यक्ष प्रभाव भारत, टर्की, ईरान, चीन आदि देशों पर पड़ा। भारत के इसी के व्यापक प्रभाव के कारण 1905 से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में उग्रवादी दौर और कालान्तर में भारतीय राजनीति में हिंसक राष्ट्रवाद के दौर के पूर्वार्ह में 1906 की ईरान की क्रांति और 1908 के टर्की के युवातुर्क आंदोलन पर भी इसका प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा था।

Ashish

सर्वमान्य है कि अबतक पश्चि० के तथाकथित सभ्य देशों का शक था कि काले एंव असभ्य एशियाई देशों पर शासन करना ना तो उनकी जरूरत है और ना ही कोई इच्छा बल्कि एक धर्म है। ईश्वरीय आदेशा के प्रति निष्ठा एंव वफाकारी है जिसे पश्चि० विद्वानों ने 'white'smen burden's Theory' की संज्ञा दी है।

निकोलस मैन्सन ने ठीक ही लिखा है कि इस युद्ध ने एशियाई लोगों को सुशक्तावस्था से जागाकर राजनीतिक दृष्टिकोण नई चेतना दी और वे गोरे लोगों के आधिपत्य या श्रेष्ठता की भावना को अब सहने की स्थिति में नहीं थे।